साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

साहित्य तत्कालीन समाज का आईना बतलाते हुए व्यक्ति को कल्पना के स्थान पर यथार्थ की ओर ले जाता है। वह समाज, संस्कृति, राजनीति, सामाजिक और भौतिक स्थिति से हमें रूबरू कराता है। इस अंक में हरिराम मीना की कविता 'गली-गली में घूमते' में स्त्री चेतना के स्वर दिखाई देते हैं, जोकि आह्वान है कि स्त्री अब कमजोर नहीं है बल्कि वह शोषकों को मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम है। वहीं पर, संजय जैन की कविता 'संकल्प' में गिले शिकवे भुला कर दिल में प्यार मोहब्बत की ज्योति जगाने की बात की गई है। तुषार पुष्पदीप सूर्यवंशी की कविता 'सिसकते किताबों के पन्ने' में साहित्य के प्रति अरुचि और अपने सपनों की अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया गया है। दूसरी तरफ, परिवर्तनकारी कुशराज ने अपने आलेख 'दोस्ती' में सच्ची मित्रता के तमाम लक्षण नए पुराने उदाहरण से बताने की सार्थक कोशिश की है। आज के अद्यतन समय में सच्चा दोस्त ढूंढना किसी खजाने को ढूंढना जैसा है। संध्या शर्मा अपने आलेख 'भगोरिया पर्व' में मध्य प्रदेश के निमाड़ में आदिवासियों के भगोरिया पर्व की ऐतिहासिक झांकी प्रस्तुत की है, जिसमें फाल्गुन में महुआ-टेशु के फूलों की उमंग और प्रेम को आदिवासी समाज-संस्कृति के रंग की रोचक अभिव्यक्ति है। आदिवासियों में जीवनसाथी के चुनाव के रस्मों-रिवाजों का मार्मिक चित्रण किया है। आलोक कौशिक की लघुकथा 'जानकी का घर' में समाज में स्त्री शिक्षा को दबाने और उसे सेविका का दर्जा देकर गुलाम बांए रखने का प्रतिरोध किया है।

अक्टूबर का महीना शुरू होते हीं हमारे देश में सांस्कृतिक धार्मिक पर्व-त्योहार शुरू हो जाते हैं। हिंदी सिनेमा की दृष्टि से देखा जाए तो अभी फिलहाल सन्नी पाजी की फ़िल्म गदर पार्ट 2 ने सिनेमाघरों में एक अलग सा माहौल बना रखा है। कई दिनों से बॉलीवुड में पड़े टिकट खिड़की के अकाल में मानों टिकटों की बाढ़ सी ला दी है। त्योहारों के मौसम में इसे सिनेमा का उत्सव कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। दूसरी ओर हमारे देश के वैज्ञानिकों ने अभूतपूर्व सफलता हासिल करते हुए मिशन चन्द्रयान के बाद अब सूर्य का विस्तृत अध्ययन करने के लिए मिशन आदित्य पर लगे हैं। इसरो के अनुसार सूर्य का अध्ययन करने वाला पहला अंतरिक्ष आधारित भारतीय मिशन होगा।

पत्रिका का यह अंक देश की साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक एवं सिनेमाई स्थितियों की हलचल सभी को अपने आप में समेटे हुए है। पब जी के बहाने देश में जो अंतरराष्ट्रीय खबरें बनीं उस पर व्यंग्य हैं तो वहीं दूसरी ओर 'अजीब समस्या है मेरे देश में' और 'मेरे सपनों का समाज' लेख के जरिये देश के प्रति चिंता और प्रेम दोनों को ही समाहित किया गया है। साहित्यिक दृष्टि से शोध आलेख में 'गदर की चिनगारियाँ' नाटक संग्रह में चित्रित नारी सशक्तीकरण, लेख में 'भाषा विज्ञान कला है या विज्ञान' और भोजपुरी लोक गीत परंपरा में सोहर गीतों के योगदान को बताया है। अंत में ग़ज़ल 'यहाँ की हवाओं में ज़हर घोलने वाले' सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अच्छा संदेश देती है। आलेख, शोध आलेख, कविता, कहानी और समीक्षा भेजने वाले सभी सुधी जनों का हार्दिक आभार। आप सभी का प्यार ऐसे ही बना रहेगा। आपके अमूल्य सुझावों की अभिलाषा में प्रतीक्षारत...

-आशुतोष श्रीवास्तव